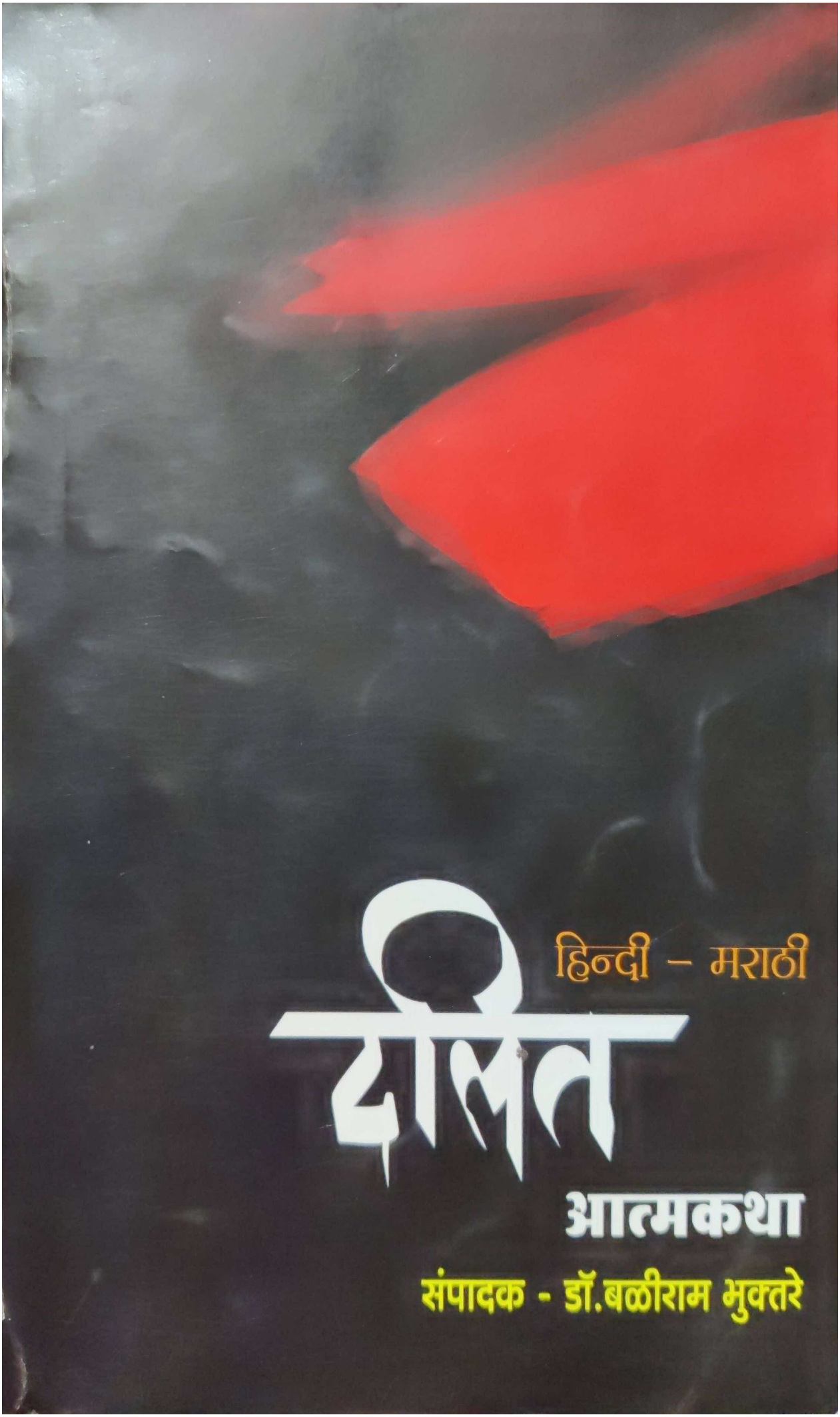
हिन्दी - मराठी
दलित
आत्मकथा
संपादक - डॉ.बळीराम भुक्तरे

हिंदी-मराठी दलित आत्मकथा

संपादक :

डॉ.बळीराम भुक्तरे

© संपादक

ISBN : 978-93-80913-26-1

प्रकाशक - चंद्रकांत पाण्डे

प्रकाशन - दिव्य डिस्ट्रीब्युटर्स, कानपुर

संस्करण : प्रथम

अगस्त 2015

मूल्य : 400/-

शब्दसज्जा : सूरज चौधरी, उदगीर (महाराष्ट्र)

HINDI-MARATHI DALIT ATMAKATHA

Edited by -

Dr.Baliram Bhuktare

39)	आठवर्णीचे पक्षी और जूठन आत्मकथा की तुलना	डॉ.एन.जी.एमेकर	134
40)	हिंदी तथा मराठी आत्मकथा में व्यक्त दलित जीवन	डॉ.पवन एमेकर	137
41)	हिंदी-मराठी आत्मकथा : स्वरूप, उद्‌भव, विकास	एंगडे राहुल	140
42)	दलित आत्मकथा उद्‌भव और विकास	डॉ.महावीर हाके	143
43)	दलित साहित्य की भूमिका	डॉ.संगिता उप्पे	145
44)	दलित आत्मकथा में स्त्री	डॉ.भारती गोरे	148
45)	जूठन तथा यादों के पंछी आत्मकथा में जीवन दर्शन	बालाजी बोंडले	151
46)	तुलनात्मक साहित्य अर्थ एवं स्वरूप	एस.बी.बिरादार	154
47)	हिंदी तथा मराठी की आत्मकथा में दलित स्त्री का चित्रण	डॉ.संतोष येरावार	157
48)	हिंदी दलित आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे'	प्रा.जितेंद्र शेळके	163
49)	'अपने-अपने पिंजरे' आत्मकथा में दलित संवेदना	डॉ.पुष्पा गायकवाड	165
50)	हिंदी की दलित आत्मकथाओं में स्त्री चित्रण	डॉ.प्रकाश शिंदे	169
51)	दलित शोषण का जीवंत दस्तावेज जूठन के संदर्भ में	प्रा.रमेश कांबळे	173
52)	हिंदी एवं मराठी दलित आत्मकथाओं में सामाजिक चेतना	लक्ष्मी मनशेट्टी	176
53)	हिंदी मराठी दलित आत्मकथा में स्त्री	प्रा.गजानन बने / प्रा.संतोष सुरसकांबळे	181
54)	'आयदान' आत्मकथा में व्यक्त दलित स्त्री जीवन	प्रा.नागराज मुळे	185
55)	'दोहरा अभिशाप' में व्यक्त नारी	प्रा.दिलीप गुंजरगे	188
56)	मराठी हिंदी दलित आत्मकथा का तुलनात्मक अध्ययन विशेष संदर्भ 'उपरा' और 'जूठन'	प्रा.विजय गवळी	192
57)	दलित आत्मकथा एक दृष्टि	डॉ.पल्लवी पाटील	195

हिन्दी तथा मराठी की महिला आत्मकथा में दलित स्त्री का चित्रण

प्रा.डॉ.संतोष येरावार
देगलूर महाविद्यालय देगलूर

हिन्दी तथा मराठी महिला लेखिकाओंने अपनी आत्मकथा के माध्यम से स्त्री जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला हैं | स्त्रियों का प्रस्थापित समाज व्यवस्था नें उपभोग की वस्तु मात्र मानकर शोषण किया हैं | उसे एक दासी, सेविका और वासना की पुर्तता करनें तक ही सिमित रखा गया हैं | सदैव पुरुषों ने और समाज व्यवस्था नें स्त्रीयों के साथ सौतेला व्यवहार किया है | अन्याय, अत्याचार को सहन करने के लिए स्त्री का जन्म हुआ हैं | परिवार और बच्चे तक स्त्री का अस्तित्व सिमित होना चाहिए उसे निर्णय प्रक्रिया में कोई अधिकार नही होना चाहिए यह मानसिकता पुरुषों ने बना ली हैं जो स्त्री शोषण को बढावा दे रही हैं | दलित स्त्रियों की अवस्था तो और भी अधिक दयनीय हैं | अशिक्षा, अंधश्रध्दा, बेरोजगारी और दरिद्रता के कारन दलित स्त्रियों के जीवन में गहरा अंधकार छा गया हैं | हिन्दी तथा मराठी स्त्री लेखिकाओने अपनी आत्मकथा के माध्यम से भोगी हुई पीडा और शोषण को प्रखरता से उजागर किया हैं | स्त्री होने के कारण भोगी हुई त्रासदी, पुरुष प्रधान मानसिकता से निर्माण घूटन एवं उपभोगिता, परंपरा और अंधश्रध्दा के कारण उपजी पीडा तथा समाज मे व्याप्त अस्पृशता को आत्मकथा के माध्यम से उघाडा हैं |

आत्मकथाओं की परंपरा मराठी में बहुत सशक्त हैं | दलित लेखिकाओंने अपनी भोगी हुई यातना और पीडा को आत्मकथा के माध्यमसे उजागर किया हैं | कुमद पावडे ने 'अंतः स्फोट' में दलित जीवन एवं परिवर्तन की दिशा में निकले दलित स्त्री की संघर्ष गाथा हैं | सामाजिक परिवर्तन एवं सचेतन की दृष्टि से यह आत्मकथा महत्वपुर्ण हैं | मुक्ता सर्वगौड की आत्मकथा 'मिटलेली कवाडे' में दलित जीवन में आनेवाली विपदाओं को उजागर किया गया हैं | दलित नेतृत्व, दलितो को मिलनेवाली सुविधाएँ और उससे प्राप्त मानसम्मान के प्रति प्रखर विचार प्रकट किए हैं | शांताबाई कृष्णाजी कांबळे द्वारा लिखित 'माझ्या जन्माची चित्तर कथा' आत्मकथा में स्त्री यह उच्च जाति की हो या निम्न जाति की उसे दासी के रुप में ही जीवन व्यतित करना पडता है इस वास्तविकता को उघाडा हैं | शांताबाई ने परंपरा और पुरुषी उपभोगी मानसिकता के विरोध में विद्रोह किया और शोषण, अन्याय एवं अतयाचार का विरोध किया | बेबी कांबळे की आत्मकथा 'जिणं आमचं' महार जाति के सभी पहलुओंको उघाडती

| विवाहसंस्कार, अंधश्रध्दा, वृत्त, दरिद्रता, संसर्गजन्य बिमारियाँ, जादु-टोना आदि का यथार्थ
त्रण किया गया हैं | 'मरणकळा' यह आत्मकथा 'गोपाळ' समाज की जनाबाई कचरु गिन्हे
ी हैं | गोपाळ जाति की व्यथा, पीडा, संत्रास, अज्ञान, अंधश्रध्दा और रीतिरिवाज के चित्रण के
ाथ जनाबाई कचरु की शिक्षक होने की संघर्ष गाथा दिखाई देती हैं | 'अदोर' यह आत्मकथा
जूबाई गावीत की है जिसमें आदिवासी स्त्री जीवन को उघाडा गया हैं |

हिन्दी महिला आत्मकथाओं में मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तुरी कुण्डल बसै-गुडिया भीतर
डिया' आत्मकथा में परंपरागत स्त्री विरोधी मुल्यों पर प्रहार किया हैं | 'शिकंजे का दर्द'
ुशीला टाकभौरे लिखित आत्मकथा दलित नारी जीवन का जीवंत दस्तावेज हैं | नारी के दमन,
ोषण और संघर्ष की गाथा हैं | 'शिकंजे का दर्द' पुरुष और समाज के शिकंजे में फँसी स्त्री की
ाथा हैं | 'शिकंजे का दर्द' के संदर्भ में सुशीला टाकभौरे लिखती हैं, "शिकंजा यानी पंजा,
जसकी जखडन में रहकर कुछ कर पाना कठीन हैं | शिकंजा यानी कठघरा जिसमें कैद होकर
ुसके बाहर जाना कठीन हैं |"[1]

कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा 'लगता नही है दिल मेरा' में पुत्री को पुत्र के सामने
ुच्छ, एवं मुल्यहीन माना जाता हैं | इस लिंगभेदी मानसिकता को उजागर किया गया हैं | पदमा
सचदेव की 'बूँद - बावडी' में परिवारिक समस्या को उजागर किया गया हैं | परिवार में स्त्रियों
को किस प्रकार घुट - घुट कर जीना पडता हैं, इस वास्तविकता को उजागर किया गया हैं |
'आयदान' उर्मिला पवार की आत्मकथा में दलित स्त्रीयों की दयनीय अवस्था का चित्रण हैं |
उर्मिला पवार को बचपन में ही दलित होने का दुखद अनुभव मिलता हैं | दलित होने की पीडा
,और आर्थिक शोषण कों 'आयदान' में उजागर किया गया हैं | आयदान में कोकण के
रत्नागिरी और फणसावली की भाषा, संस्कृति एवं जीवन ही मुख्य रुप से सामने आता हैं | आगे
फिर मुंबई और वहाँ की झोपडपटटी का वर्णन आता हैं, जिसमें उर्मिला का संघर्षमय जीवन
व्यतीत हुआ हैं | कुसुम अंसल की 'जो कहां नही गया' जीवनरुपी आत्मकथा हैं | 'कुडा
कबाडा' अजीत कौर की आत्मकथा में औरत होने की कथा हैं | परिवार से लेकर ससुराल
तक के पीडायुक्त जीवन का वर्णन आत्मकथा में हैं | स्त्री को कुडा समझनेकी विकृत मानसिकता
का चित्रण आत्मकथा में है |

'दोहरा अभिशाप' कौशल्या बैसंत्री की आत्मकथा में लेखिका के अभिशप्त जीवन
की करुण गाथा हैं | लेखिका दलित समाज में पैदा हुई इस कारण एक तरफ दलित होने का
अभिशाप और दुसरी तरफ स्त्री होने का अभिशाप हैं | दलित और स्त्री होने की पीडा क्या होती
हैं इसका चित्रण इस आत्मकथा में हैं | दलित समाज में अशिक्षा, बेरोजगारी, अंधश्रध्दा
रीतिरीवाज के कारण स्त्रियों का शोषण होता हैं और उन्हे संपूर्ण जीवन अभाव और घुटन में

जीना पडता हैं | दूसरी तरफ स्त्री होने का दर्द हैं | पुरुष की वासनांधता, पुरुषी अहंकार के कारण उपजी दासता वृत्ती, परिवार और बच्चें ही स्त्री होने की पहचान के कारन एक दलित स्त्री दोहरे अभिशाप में जीती हैं | इसी आधार पर लेखिकाने 'दोहरे अभिशाप' यह शिर्षक दिया हैं | कौशल्या बैसंती नें दलित समाज का संवेदनात्मक एवं यथार्थ चित्रण किया हैं | दलित वर्ग के रीतिरीवाज, खानपान, छुआछुत, अंधश्रध्दा, सामाजिक मान्यता, को अभिव्यक्ती मिली है | शाल्यजीवन से ही अस्पृश्यता की शिकार लेखिका संघर्ष करती हुई और समाज में व्याप्त विकृतियों और रुढी - परंपराओं का साहस के साथ विरोध करती हुई शिक्षा ग्रहण करती हैं | एक उच्च शिक्षित देवेंद्रकुमार से बडी आशा से विवाह करती हैं की उसके हिस्से में सुख और शांति आयेगी परंतु बाकी पुरुषों के समान ही शारिरिक भूख मिटाने और नौकरों की तरह घर के सारे काम तक लेखिका को सीमित रखा जाता हैं | प्रताडना, अपमान, शोषण, घृणा और तिरस्कार की शिकार लेखिका निश्चय करती है की, उनके पति के अन्याय अत्याचार को सहन नहीं करेगी | और पति से अलग होकर सन्मानपुर्वक एवं शोषण रहित जीवन जीने का निर्णय लेती हैं |

भारतीय समाज व्यवस्था नें लडके को लडकी से अधिक महत्व, मान-सन्मान एवं अधिकार दिए हैं | आत्मकथा में यह वास्तविकता दृष्टिगोचर होती हैं | लडकी को बोझ । एवं अभिशाप माना जाता हैं, लेखिका के माँ को सात बेटियाँ और दो बेटे हो गये थे लेकीन दो बेटियाँ और दो बेटे मर जाने के बाद पाँच बेटियाँ रह गयी थी | इसी कारण अपने आपको कोसती थी, "देवा मैने ऐसा कोन सा पाप किया था कि मेरे नसीब में लडकियाँ ही लिखी हैं ?"[2] लडकियों को पापों के परिणाम के रूप में देखा जाता है, इसी मानसिकता के कारण स्त्री के साथ दुजाभाव एवं दुषित भाष्य रखा जाता हैं |

आत्मकथा में बालविवाह एवं विधवा विवाह के कारण स्त्रियों के जीवन में आयी त्रासदी, संत्रास और पीडा का चित्रण किया गया हैं | लेखिका की दादी बालविधवा है और उसका दुसरा विवाह मोडूक से हो जाता हैं | मोडुक अपनी दोनो पत्नीयों पर हीन भावना के कारण अत्याचार करता हैं | एक रात वह बिना बताये अपने बच्चों के साथ चली जाती हैं | और संघर्ष करती हुई आत्मनिर्भर बनती हैं | अत्यंत दृढनिश्चयी, साहसी, मेहनती और संघर्षशीलता के कारण व दलित समाज के लिए एक आदर्श पात्र हैं |

'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में सुशीलाजी ने भोगी हुई पीडा, वेदना और समाज की घृणीत मानसिकता को उघाडा हैं | सुशीला जी कहती हैं, सुशीला जी को मुलतः दुख दलित होने का था और दुसरा दुःख स्त्री होने का वह कहती हैं, यह सत्य है कि दलित स्त्री दलितों में भी दलित हैं | बाल्य अवस्था सें ही सुशीला जी को समाज के तिरस्कार का सामना करना पडा |

'शिकंजे का दर्द' में सुशीला जी लिखती है, "कक्षा में ब्राह्मण, बनियों के बच्चों को सबसे आगे बैठाया जाता था | अछुत बच्चे सबसे पीछे बैठते थे, कक्षा में यह श्रेणी वर्गीकरण जैसा था, इससे हमे अपने वर्ण और जाति का आभास हमेशा रहता था |"[3] स्कुल में दलितों को तिरस्कार, घृणा और विरोध की दृष्टि से देखा जाता था | विद्यार्थी, चपरासी, शिक्षक सभी भेदभाव पुर्ण रवय्या अपनाते और अपमानित करते थे | एक तरफ समाज के द्वारा उपेक्षा और अपमान मिलता तो दुसरी और दलित समाज आर्थिक विपन्नता, दरिद्रता, अंधश्रध्दा, भुखमरी और अशिक्षा का शिकार था | दोनो तरफ से दलितों कि दशा चिंतनीय और दयनीय थी | ऐसे कठीन परिस्थिती में लेखिका आंबेडकर के विचारों से प्रेरणा ग्रहण करती हैं और संघर्ष कर नए मुकाम को हासिल करती हैं | अन्याय, अत्याचार और शोषण के विरोध में आवाज बुलंद करती हैं | दलित स्त्रियों को अन्याय के विरोध में आवाज उठाने को प्रेरित करती हैं | 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा के मनोगत में सुशीला जी कहती हैं, "सदियों के मुक मानव अब बोलने लगे हैं, अपने अधिकारों की लढाई लढने लगे हैं | प्रगति के मार्गपर आगे बढते हुए अपनी व्यथा कथा लिखने लगे हैं |"[4] सुशीला जी को जो लोग अपने पास बैठने नही देते थे आज वही अपने आत्मविश्वास, साहस और संघर्ष शीलता के कारन प्राध्यापिका की नौकरी करती है | 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा स्त्री के मुक्ति और संघर्ष की गाथा हैं |

'माज्या जल्माची चित्तर कथा' आत्मकथा शांताबाई कृष्णाजी कांबळे जी की हैं | यह आत्मकथा इनके संघर्ष, साहस और आत्मसम्मान की गाथा हैं | शांताबाई के गर्भवती अवस्था में ही उसका पति दुसरा विवाह करने की बात करता हैं, तब वह उसे कहती है, "मी काय इथं राहत नाय, मला सोडचिठ्ठी द्या मी माहेरी जाते |"[5] और वह प्रसंगानुरुप मायके चली जाती है | पति जब लेने आता है, तो कहती हैं, "आता मी काय येत नाय. तिला घेऊन जावा आन् खुशाल राज्य करा. आता माझी आशा सोडाच |"[6] संघर्ष करती हुई शांताबाई शिक्षिका कि नौकरी करती हैं और अपना आत्मसम्मान वापस पाती हैं | अपनी सफलता को पाठको के सामने मात्र रखना लेखिका का उद्देश नहीं है, तो दलित समाज में व्याप्त अशिक्षा, दरिद्रता, दु:ख, पीडा, अंधश्रध्दा आदि का परिचय देना है | गरीब, अज्ञानी दलित समाज को परिवर्तन कि दिशा मिले इस उद्देश से लेखन किया हैं | वर्षो से सामाजिक, भावनिक गुलामी में जी रहे दलितों को सम्मान मिले, न्याय मिले यह भावना लेखिका की रही हैं | दलित स्त्रियों को पढने की आझादी नहीं थी न ही घर से बाहर जाने की, पुरुषों की भी मानसिकता होती थी की, लडकी पढ-लिखकर क्या करेगी उसे तो घर का काम ही करना होता हैं, सखाराम गुरुजी से कहता है , "पोरीचं नाव कशाला घातंल मास्तर ? तिची कसली शाळा ? पोरीचा शिकून काय उपयोग हाय ?"[7]

लेखिका कहती हैं दलित समाज का स्कुल और शिक्षक जँहा पर हैं वही पढने लिखने का अधिकार दलितों को होता था | "आमी सगळीजनं चांभार वाडयातल्या शाळांत जात हुतू |त्या शाळंत महार - मांगाची, चांभाराची पोंर जात हुती |"[8] तिसरी कक्षा से परिस्थिति बदल गई स्कुल गाँव में ही थी, उच्च जाति के शिक्षक पढाने को थे परंतु दलित छात्रों का स्पर्श होने नही देते थें | लिखी हुई तक्ती कों पहले नीचे रखने को कहते फिर बादमें उठाकर जाँचते थे | छडी भी फेक कर मारते थे या कक्षा के बाहर बिठाते थें | स्कूल में जाति के कारण किस प्रकार भेदभाव किया जाता था इसका उदाहरण लेखिका और उनकी माँ का यह संवाद है | "आये, चांबारमास्तर चांगलं हुतं, ते आमाला बाहीर बसवत नव्हत |"माँ कहती हैं, "मास्तर कुळवाडयाचे हायतं, ती आपल्या म्हारा-मांगाच्या मुलाला कस शिवून घेत्याल ?" लेखिका कहती हैं, आये, "मास्तर पन मानूस हाय, आपूनबी मानूसच हाय. मग मास्तर कसा आपल्याला शिवून घेत नाय ?"[9] शिक्षा क्षेत्र में भी दलितों की तरफ हीन दृष्टि से देखा जाता हैं | इस यथार्थ कों शांताबाई कांबळे ने उघाडा हैं |

पुरुषी मानसिकता स्त्रियों का शोषण करती हैं और उन्हे उपभोग की वस्तु मात्र मानती हैं | जिस कांबळे मास्तर के साथ शांताबाई का विवाह होने वाला होता हैं उनका किसी के साथ नाजायज रिश्ता था परंतु किसीने विरोध नहीं किया | अर्थात पुरुष कुछ भी करें तो चलेगा लेकिन औरत किसी से बात भी करती हैं तो उसे कुल्टा एवं चरित्रहीन कॅहा जाता हैं | पुरुष प्रधान संस्कृति में स्त्रियों को कोई स्थान नही हैं न कोई महत्व |

अस्पृश्यता यह समाज को लगी हुई विकृत बीमारी हैं | अस्पृशता का चित्रण आत्मकथा में हैं, जीजा साबळे लेखिका से कहती है, "ए, म्हाराचे पोरे | चल बाजूला हों. मला शिवचीलकी ! तुला दिसत नाय का ? तुझ डोळ फुटल्यात !"[10]

हिन्दी एवं मराठी महिला लेखिकाओं के आत्मकथा में दलित स्त्रियों की वास्तविकता का चित्रण किया गया हैं | शोषण, अपमान, तिरस्कार घृणा, विरोध, अभाव और दुख भरा जीवन दलित स्त्रीयों के जीवन के अंगविशेष बन गए हैं इस वास्तविकता को उघाडा गया हैं | हिन्दी एवं मराठी महिला लेखिकाओं की आत्मकथा में अस्पृश्यता इस समस्या कों प्रमुखता सें वाणी प्रदान की हैं, अस्पृश्यता यह समाज व्यवस्था को किस प्रकार विकृत बना रहा है, मानव को पशु बना रहा हैं | अंधश्रध्दा, अज्ञान, दरिद्रता और अशिक्षा के कारण दलित स्त्रियों का जीवन नरक बन गया हैं | एक तरफ दलित होने का दर्द हैं, तो दूसरी तरफ स्त्री होने का | दलित स्त्रियों का जीवन यह अत्यंत संघर्ष से भरा हुआ हैं | 'शिकंजे का दर्द' 'दोहरा अभिषाप', 'जिणं आमुचं', 'आयदान', 'मरणकळा', 'माझ्या जन्माची चित्तर कथा', यह सभी आत्मकथाएँ दलित स्त्रियों के संघर्ष की गाथा हैं |

सभी लेखिकाओंने भोगी हुई यातना, पीडा, संत्रास, वेदना, अभाव और दुखों को वाणी प्रदान की हैं | सभी लेखिकांओको पुरुषी अहंकारी मानसिकता , अंधश्रध्दा, जातियता, अस्पृश्यता, अन्याय और अपमान को झेलना पडा हैं | हिन्दी मराठी महिला लेखिकाओंने अपनी आत्मकथा के माध्यमसे दलित स्त्रियों में उर्जा का संचार करने का, उनमे साहस भरने का, उन्हे अपने अधिकारों के प्रति सचेत करने का, अपनी क्षमता को पहचान ने का और आत्मविश्वास से समस्या का सामना करने का अतुलनीय कार्य किया है |

संदर्भ सूची :

१. शिकंजे का दर्द - सुशीला टाकभौरे, पृ.सं. ०५

२. दोहरा अभिशाप - कौशल्या बैसंत्री, पृ.सं. ११

३. शिकंजे का दर्द - सुशीला टाकभौरे, पृ.सं. ०५

४. शिकंजे का दर्द - सुशीला टाकभौरे, पृ.सं. ०५

५. दलिताचे आत्मकथने, मुलाटे वासुदेव, पृ.स. १९२

६. वही पृ.सं. १९२

७. वही पृ.सं. १९४

८. वही पृ.सं. १९४

९. वही पृ.सं. १९४

१०. वही पृ.सं. १९९